Research Paper | History | E-ISSN No : 2454-9916 | Volume : 6 | Issue : 9 | Sep 2020



RASTHRIYA SWATANTRATA ANDOLAN ME MAHATMA GANDHI AUR BHARTIYA MAHILAE: EK VISHLESHNATMAK ADHYAYAN

राष्ट्रीय स्वतंत्रता आंदोलन में महात्मा गाँधी और भारतीय महिलाएँ : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

Dr. Sujit Kumar

शिक्षक, श्री लीलाधर 2 उच्च विद्यालय, बेनीपट्टी, मधुबनी, बिहार–847223

ABSTRACT

महिलाओं ने भी ब्रिटिश शासन का विरोध करने के लिए विदेशी सामानों का बहिष्कार किया जिसे पिकेटिंग कहा जाता था। श्रीमती ननीबाला देवी नई जुगांतर पार्टी में शामिल हुई जो 20वीं सदी के शुरूआती में आक्रमणकारी गतिविधियों के लिए जानी जाती थी। 1915 में दक्षिण अफ्रीका से लौटने पर महात्मा गांधी ने अहिंसा नीति अपनाने का नारा दिया। सत्याग्रह आंदोलन के लिए उनके एक आवाज पर महिलाएं उनके सभी कार्यक्रमों में शामिल होने लगी। कुछ महिलाएं जिन्होंने स्वदेशी आंदोलन में सक्रिय भूमिका निभाई – सरोजिनी नायडू, उर्मिला देवी, दुर्गा बाई देशमुख, एस अमबुजाम्मल, बासंती देवी और कृष्णाबाई राम। पढ़े लिखे और उदारवादी परिवारों की महिला तथा ग्रामीण क्षेत्रों की महिलाओं ने भी महात्मा गांधी के असहयोग आंदोलन में सक्रिय रूप से हिस्सा लिया। राजकुमारी अमृत कौर, सुचेता कृपलानी, सरला देवी चौधरानी, मुथुलक्ष्मी रेड्डी, सुशीला नायर और अरूणा आसफ अली कुछ महिला स्वतंत्रता सेनानियों में से हैं जिन्होंने असहयोग आंदोलन में भाग लिया था। कस्तूरबा गांधी और कमला नेहरू ने राष्ट्रीय आंदोलन में हिस्सा लिया। लाडो रानी जुत्शी और उनकी बेटियों ने लाहौर में आंदोलन का नेतृत्व किया। नेहरू परिवार की बेटी विजय लक्ष्मी पंडित ने भी असहयोग आंदोलन में हिस्सा लिया और अंग्रेजों के खिलाफ लड़ीं। उन्होंने विदेशों में भारत का प्रतिनिधित्व किया। वह 1936 में उत्तर प्रदेश एसेंबली में चुनी गईं।

शब्द संकेत : महिला, प्रतिनिधित्व, अंग्रेज, असहयोग, आंदोलन एवं महात्मा गाँधी।

विषय प्रवेश :

प्राचीन भारतीय समाज व्यवस्था में शास्त्रकारों ने स्त्रियों को अत्यंत उच्च स्थान प्रदान किया है। उनके अनुसार पारिवारिक एवं सामाजिक मर्यादा नारी के व्यक्तिगत चरित्र पर ही निर्भर करती है। भारतीय परम्परा ने नारियों के गौरव–गान के अनेक गीत गाए हैं। ''यत्र नर्यास्तु पुज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः'' की उक्ति इसी भारतवर्ष की है। यद्यपि नारी वैदिक युग में सम्मानपूर्ण पद पर अधिक दिनों तक प्रतिष्ठित नहीं रह सकी। उत्तर वैदिक युग में यज्ञों का आडम्बर बहुत बढ़ गया, जटिलताएँ बढ़ गयी। अशिक्षित पुरोहितों को महत्व दिया जाने लगा और पत्नियों को यज्ञाधिकार से वंचित किया जाने लगा। 200 ई0 पू0 के आसपास कन्याओं का उपनयन संस्कार बन्द हो गया तथा शिक्षा से इन्हें वंचित कर दिया गया। ईसा की तीसरी शदी से हिन्दू नारी के लिए पराधीनता, निन्दा, अशिक्षा, परदा, विधवा विवाह–निषेध, बाल–विवाह, सती प्रथा, सतीत्व के एकांगी आदर्श और नैतिकता के बदलते मानदंड आदि के चलते स्त्रियों की स्थिति जटिलतर होती चली गई। यद्यपि महात्मा बुद्ध स्त्रियों के प्रति उदासीन रहे तथापि बौद्ध काल में ही कुछ स्त्रियों को भिक्षुणी बन जाने के लिए बाध्य कर दिया गया। मिला जुलाकर समाज की मानसिकता नारी विरोधी थी।

विश्व को हिंसा एवं पारस्परिक वैमनस्य से बचाने में नारी की भूमिका प्राचीन समय से ही रही है, क्योंकि नारी केवल पत्नी ही नहीं बल्कि माँ, गुरू और संरक्षक भी है। नारी चाहे तो भविष्य में चरित्रवान और नैतिक मूल्यों वाली पीढ़ी बना सकती है। राष्ट्रीय निर्माण एवं विकास में भारतीय नारियों की भूमिका पूर्वकाल से ही चर्चा का विषय रही है। मदालसा, विदुला, सुलभा, मार्गी आदि स्त्रियाँ आचार्य ऋषि मुनि और शिक्षिका के रूप में भी यज्ञ अर्जित कर चुकी थीं। दुनियां में भारतवर्ष ही ऐसा देश है, जहां माता को प्रधानता देते हुए 'मातृ देवो भवः' का व्यावहारिक रूप दिया गया है। देश के विभिन्न भागों में पटनदेवी, ब्राह्मणी, छिन्नमस्ता, विन्ध्यवासिनी, कामाख्या, भूदेवी, महाकाली, महालक्ष्मी, महासरस्वती, दुर्गा आदि देवियां शक्ति के रूप में नारी शक्ति का प्रतीक रही हैं।

हमारे यहाँ महिलाओं का एक नाम अबला भी है और अक्सर वे अबला के रूप में जानी जाती हैं। मगर, इन्हीं अबलाओं ने अनेक बार खून से होली भी खेली है। स्वतंत्रता की क्रान्तिवेला में महिलाओं की भूमिका इतिहास की एक गौरव बन चुकी है। चहारदीवारी के अन्दर निरन्तर बन्द रहने वाले महिलाएं मातृभूमि का करूण रूदन सुनकर गोरी हुकूमत के खिलाफ विद्रोहात्मक रुख अख्तियार कर उनपसे डटकर लोहा लेने लगीं।

भारत की तत्कालीन सामाजिक परिस्थितियों में महिलाएं बाहरी कार्यों में खुलकर भाग नहीं ले सकती थीं, किन्तु ये प्रतिबन्ध निम्न वर्ग की कृषक मजदूर स्त्रियों पर लागू नहीं थे। राज परिवार की स्त्रियां शस्त्र चलाने में निपुण होती थीं। ऐसी स्त्रियों ने सामाजिक सुधार आंदोलन में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी। नारियों का उचित मान–सम्मान समाज की खुशहाली का प्रतीक है, समाज की श्री–वृद्धि का करण है। लेकिन आज नारी मात्र पूजा की वस्तु नहीं है। वह पुरुष के साथ कंधे से कंधा मिलाकर जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में अग्रसर हो रही है। सफलता की सीढ़ियाँ तय कर रही है। उसका भविष्य आज उसके साथ में है।

19वीं सदी के विभिन्न आंदोलन में महिलाओं का सीन :

19वीं सदी के शुरुआती दौर में जब क्रांतिकारी आन्दोलन जोर पकड़ रहा था तो नारियाँ भी पीछे नहीं रही। के0 आर0 कामा, भिखाई जी रुस्तम, सरला देवी आदि ने क्रांतिकारियों का खुला समर्थन किया। राष्ट्रीय आन्दोलन के क्रांतिकारी इतिहास में मैडम कामा का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है।

15 अगस्त 1947 को भारत अंग्रेजों की गुलामी की बेड़ियों को तोड़ने में सफल हुआ। अगस्त माह का यह दिन सभी भारतवासियों के लिए गर्व का दिन है। स्वतंत्रता दिवस तो सभी मनाते हैं पर कितने लोग उन्हें याद करते हैं जिन्होंने हमें स्वतंत्र भारत में सांस लेने का मौका दिया। आजादी के युद्ध में स्त्री, पुरूष, युवा, बुजुर्ग सभी निस्वार्थ भाव से कूद पड़े थे। कितने माँओं की गोद सूनी हो गई, कितनी पत्नियों को मांग सूनी हो

गई। भारतीय राजनीतिक परिदृश्य पर मातंगिनी हाजरा और सरोजिनी नायडू आदर्श के रूप में देखी जाने लगी थी। स्वतंत्रता संग्राम के दौरान भारतीय महिलाओं ने सामाजिक बदलावों के लिए विद्रोही गतिविधियों में सक्रिय रूप से भाग लिया। महिलाओं की भागीदारी सत्याग्रह तक ही सीमित नहीं थी। 19वीं शताब्दी के अंत में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के साथ महिलाओं की घनिष्टता बढ़ी और भारत के राष्ट्रीय गतिविधियों में उनका योगदान प्रारंभ हुआ।

1980 में भारतीय महिला उपन्यासकार स्वर्ण कुमारी घोषाल तथा ब्रिटिश साम्राज्य की पहली महिला स्नातक कादम्बरी गांगुली, भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की मीटिंग में प्रतिधि के तौर पर शामिल हुई। 1905 में बंगाल के विभाजन के साथ ही देश की स्वतंत्रता संग्राम में महत्वपूर्ण परिवर्तन आया।

महिलाओं ने भी ब्रिटिश शासन का विरोध करने के लिए विदेशी सामानों का बहिष्कार किया जिसे पिकेटिंग कहा जाता था। श्रीमती ननीबाला देवी नई जुगांतर पार्टी में शामिल हुई जो 20वीं सदी के शुरूआती में आक्रमणकारी गतिविधियों के लिए जानी जाती थी। 1915 में दक्षिण अफ्रीका से लौटने पर महात्मा गांधी ने अहिंसा नीति अपनाने का नारा दिया। सत्याग्रह आंदोलन के लिए उनके एक आवाज पर महिलाएं उनके सभी कार्यक्रमों में शामिल होने लगी। कुछ महिलाएं जिन्होंने स्वदेशी आंदोलन में सक्रिय भूमिका निभाई – सरोजिनी नायडू, उर्मिला देवी, दुर्गा बाई देशमुख, एस अमबुजाम्मल, बासंती देवी और कृष्णाबाई राम। पढ़े लिखे और उदारवादी परिवारों की महिला तथा ग्रामीण क्षेत्रों की महिलाओं ने भी महात्मा गांधी के असहयोग आंदोलन में सक्रिय रूप से हिस्सा लिया। राजकुमारी अमृत कौर, सुचेता कृपलानी, सरला देवी चौधरानी, मुथुलक्ष्मी रेड्डी, सुशीला नायर और अरूणा आसफ अली कुछ महिला स्वतंत्रता सेनानियों में से हैं जिन्होंने असहयोग आंदोलन में भाग लिया था। कस्तूरबा गांधी और कमला नेहरू ने राष्ट्रीय आंदोलन में हिस्सा लिया। लाडो रानी जुत्शी और उनकी बेटियों ने लाहौर में आंदोलन का नेतृत्व किया। नेहरू परिवार की बेटी विजय लक्ष्मी पंडित ने भी असहयोग आंदोलन में हिस्सा लिया और अंग्रेजों के खिलाफ लड़ीं। उन्होंने विदेशों में भारत का प्रतिनिधित्व किया। वह 1936 में उत्तर प्रदेश एसेंबली में चुनी गईं। 1937 में वह भारत की पहली महिला कैबिनेट मंत्री बनी। अरूणा आसफ अली दिल्ली की पहली मेयर चुनी गई। सरोजिनी नायडू ने खिलाफत आंदोलन के लिए सक्रिय रूप से प्रचार किया। नेताजी सुभाष चंद्र बोस ने इन्डियन नेशलन आर्मी का गठन किया था। इसमें पुरूषों और महिलाओं का अलग–अलग रेजिमेंट था। महिलाओं के रेजिमेंट का नाम झांसी की रानी पर रखा गया। नेताजी ने इस रेजिमेंट के लिए 1000 महिलाओं को एकत्रित किया। डॉ0 लक्ष्मी स्वामीनाथन ने इस रेजिमेंट का नेतृत्व किया। वह पेशे से चिकित्सक थीं। विवाह के बाद वह लक्ष्मी सहगल बन गई। इस रेजिमेंट की महिलाओं का प्रशिक्षण भी पुरूषों के रेजिमेंट के सामान ही होता था। उन्हें पोशाक भी पुरूष सैनिकों के समान ही पहनना पड़ता था। युद्ध क्षेत्र में नेताजी की आई एन ए कई कारणों से ज्यादा गहरी छाप न छोड़ पाई हो लेकिन इन महिलाओं की वीरता की कहानी ने भारत की दूसरी महिलाओं पर जबरदस्त मनोवैज्ञानिक असर छोड़ा।

एक ओर गांधीजी के साथ अनेक देशभक्त महिलाएं थी, कांग्रेस में भी महिलाएं शामिल हो रही थी। देश के सभी हिस्सों में महिलाएं क्रांतिकारी गतिविधियों में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही थी। काकोरी कांड में महिलाओं का योगदान था। सन् 1928 में लतिका घोष ने महिला राष्ट्रीय संघ की नींव डाली। बीना दास ने बंगाल के नर्वनर को गाली मारी थी। कमला दासगुप्ता और कल्यानी दास क्रांतिकारी दल के साथ सक्रिय रूप से जुड़ीं थी।

महात्मा गांधी महिलाओं को रूढ़ियों और कुप्रथाओं से मुक्त करने अैर स्वतंत्र रूप से व्यक्तित्व विकास के हिमायती रहे हैं। गांधी जी ने महिलाओं के हक में जोरदार ढंग से तब आवाज उठाई, जब भारत में महिलाओं की दयनीय स्थिति के विरूद्ध कोई आवाज नहीं उठाता था। कोई कल्पना भी नहीं करता कि स्त्रियां भी स्वतंत्र हो सकती है। लेकिन गांधी जी ने बिना किसी की परवाह किए स्त्रियों के उद्धार कके लिए कई कदम उइाए। उन्होंने बाल विवाह, पदा प्रथा और दहेज जैसी कुरीतियों के खिलाफ आवाज उठाई और घर के बाहर सार्वजनिक जीवन में उनकी भागीदारी सुनिश्चित की। पहले दक्षिण अफ्रीका, फिर भारत में चल रहे स्वतंत्रता आन्दोलन में महिलाओं को शामिल किया। महिलाओं में अहिंसा की विशेष शक्ति है – इसे गांधी जी ने जोरदार तरीके से खासकर महिलाओं को अहसास कराया। वे ब्रिटेन में मताधिकर के लिए वहां की महिलाओं के आंदोलन से प्रभावित हुए थे। इसके बाद ही उन्होंने दक्षिण अफ्रीका और फिर बाद में भारत मं आजादी के लिए उनके नेतृत्व में किए जा रहे विभिन्न सत्याग्रहों और आंदोलनों में महिलाओं को बढ़–चढ़कर हिस्सा लेने और जरूरत पड़े तो जेल तक जाने के लिए प्रोत्साहित किया।

दक्षिण अफ्रीका के प्रवासी भारतीयों के अधिकार के सिलसिले में गांधी जी ने 1906 और 1909 में दो बार लंदन का दौरा किया। वहां उन्होंने देखा कि महिलाएं मताधिकार के लिए कैसे अपने अहिंसक आंदोलन को आगे बढ़ा रही थी। गांधी जी ने ब्रिटेन की महिलाओं को बहादुर बताते हुए उनके समर्थन में कई बार अपने अखबार इंडियन ओपिनियन में लिखा। बाद में 1918 में ब्रिटेन की महिलाओं को मताधिकार हासिल होने में कामयाबी भी मिली। इस कामयाबी के सौ साल पूरे हो गए हैं। जाने–माने इतिहासकार रामचंद्र गुहा का कहना है कि ब्रिटेन की इन महिलाओं का गांधी जी पर गहरा असर पड़ा। ब्रिटेन की महिलाओं के संघर्ष ने दक्षिण अफ्रीका में गांधी जी के प्रदर्शन के तरीके को प्रभावित किया और उनके अपने देश लौटने पर उनके फैसलों को प्रभावित किया, जिससे उन्होंने कांग्रेस की स्वतंत्रता के साथ ही पूर्ण मताधिकार की मांग का समर्थन किया। यह सच है कि भारत में महिलाओं को मताधिकार के लिए अलग से कोई आंदोलन करने की नौबत नहीं आई। आजादी हासिल होते ही भारतीय महिलाओं को पुरूषों की तरह ही मताधिकार सहज ही हासिल हो गया। ऐसा कुछ गांधी जी की वजह से ही संभव हुआ क्योंकि महिलाओं के उद्धार के मुद्दे पर गांधी जी किसी भी तरह के समझौते के पक्ष में नहीं थे। गांधी जी कहते थे कि स्त्रियों के सवाल पर मैं किसी तरह का समझौता स्वीकार नहीं कर सकता। मेरी राय में महिलाओं पर ऐसा काई कानूनी प्रतिबंध नहीं लगाया जाना चाहिए, जो पुरूषों पर न लगाया गया हो।

पूर्व अध्ययनों की समीक्षाः

पूर्व अध्ययनों की समीक्षा के क्रम में विभिन्न आचार्यों द्वारा लिखित पुस्तकों का अवलोकन किया गया है जिसमें :

जोन्स, डेविड ई. (2000) ओमेन वारियर्स नामक पुस्तक में कहना है कि स्वतंत्रता आंदोलन में कतिपय भारतीय महिलाओं का योगदान अहम है किंतु सबसे सार्थक एवं महत्वपूर्ण योगदान कस्तूरबा गांधी का रहा है जिन्होंने गांधी जी के साथ कदम–से कदम मिलाकर महिला क्रांतिकारियों को उत्प्रेड़ित एवं संगठित किया।

जैरॉस, रैनर (2007) द रानी ऑफ झांसी नामक पुस्तक में कहना है कि अंग्रेजों के विरूद्ध लड़ाई में झांसी की रानी का योगदान तो अविस्मरणीय है हीं किन्तु कतिपय अनेक महिलओं का योगदान भी हमेशा याद किया जाएगा।

परमजापे, मकरंद, आर. (2010) सरोजनी नायडू नामक पुस्तक में कहना है कि सरोजनी नायडू क्रांतिकारियों को संगठित कर कई अहम भूमिका स्वतंत्रता आंदोलन में अदा की।

गुंहा, रामचन्द्र (2014) गांधी विफोर इण्डिया में कहना है कि कस्तूरबा गांधी अपना जीवन अपने पति एवं देश की सेवा के लिए न्योछावर कर दी जो सदा अविस्मरणीय रहेगा।

अध्ययन का उद्देश्य :
राष्ट्रीय स्वतंत्रता आंदोलन महात्मा गाँधी एवं भारतीय महिलाओं का योगदान के अध्ययन का उद्देश्य निम्नलिखित तथ्यों पर आधारित है :–

- इस अध्ययन के आधार पर राष्ट्रीय स्वतंत्रता आंदोलन में महात्मा गाँधी एवं भारतीय महिलाओं का योगदान का तथ्यपरक विश्लेषण किया गया है।

- वर्त्तमान अध्ययन के आधार पर महात्मा गाँधी एवं भारतीय महिलाओं द्वारा देश के लिए किए गए कार्यो का अन्वेषन किया गया है।

अध्ययन पद्धति :
यह शोध आलेख मुख्य रूप से वर्णन एवं विश्लेषणात्मक एवं ऐतिहासिक आलोचनात्मक अध्ययन पद्धति पर आधारित है। वर्त्तमान अध्ययन राष्ट्रीय स्वतंत्रता आंदोलन में महात्मा गाँधी एवं भारतीय महिलाओं का योगदान के विविध पक्षों के अन्वेषण से संबंधित है अतः यह शोध आलेख मुख्य रूप से द्वैतियक स्रोत पर आधारित है। इस अध्ययन के लिए मूल अध्ययन स्रोत पत्र–पत्रिकाओं एवं दस्तावेज तथा विभिन्न आचार्यों द्वारा सम्पादित पुस्तकों द्वारा लिया है।

महात्मा गाँधी का महिलाओं प्रति निष्ठा :
वैश्विक स्तर पर अहिंसा के आधुनिक सिद्धांत के प्रणेता के रूप में विख्यात महात्मा गांधी जी ने अपनी पत्नी कस्तूरबा को ही अहिंसा का पहला पाठ पढ़ाने वाली शिक्षिका घोषित किया। उन्होंने पहले किसी और महिला को जेल जाने का आग्रह नहीं किया। उन्होंने इसकी शुरूआत घर से और कस्तूरबा से की। दक्षिण अफ्रीका में जब हिंदुस्तानी विवाह को वहां की सरकार ने गैर कानूनी घोषित किया, तो उन्होंने इसे हिंदुस्तानी स्त्रियों के स्त्रीत्व पर आक्रमण माना और यह निर्णय लिया कि इस लड़ाई में स्त्रियों को भी सम्मिलित होना चाहिए। गांधी जी को यह विश्वास था कि अनेक हिंदुस्तानी बहनें जेल जाने को तैयार हो जाएंगी। लेकिन स्वयं मरे बिना स्वर्ग कौन जा सकता है? गांधी जी को लगा कि कस्तूरबा अगर इस लड़ाई में सम्मिलित होने को तैयार हो जाए और जेल में जाए तो इसका प्रभाव दूसरा होगा। लेकिन कस्तूरबा को तैयार कैसे किया जाए? उन्हें आदेश देकर जबरन तैयार करने में कोई सार नहीं हैं। गांधी जी ने कस्तूरबा से कहा कि हम पुरूष जैसे सरकार से लड़ते हैं वैसे तुम भी लड़ों। अगर तुम्हे सच्ची विवाहिता पत्नी बनना हो और उपपत्नी (रखैल) न बनना हो और अपनी इज्जत तुम लोगों को प्यारी हो तो तुम भी हमारी तरह सरकार से लड़ों। मैं नहीं कहता कि तुम जेल जाओं। तुम्हें अपनी इज्जत के खातिर जेल जाने की उमंग हो तो जाओ। इा तरह गांधी जी ने कस्तूरबा को समझाया और वह तैयार हो गई। गांधी जी ने अपनी पुस्तक दक्षिण अफ्रीका के सत्याग्रह का इतिहास में स्वीकार किया है कि आज तक किसी स्त्री की इच्छा हो तो भी उसे लड़ाई में शरीक होने से रोक दिया जाता था, लेकिन दक्षिण अफ्रीका की लड़ाई में महिलांए प्रचंड शक्ति साबित हुई। गांधी जी के भारत आने के पूर्व आजादी की जो लड़ाई चल रही थी, वह पूरी तरह पुरूष केंद्रित थी। तब स्त्रियां विभिन्न सामाजिक बुराइयों से तबाह थी।

महिलाएं दहेज, बाल विवाह, वैधत्व और परदा प्रथा जैसी बुराईयों से त्रस्त थी। ऐसे में उन्हें स्वतंत्र करने और सभी स्तरों पर समानता का मौका देना तो दूर, बात तक भी नहीं की जाती थी। लेकिन गांधी जी भारत में कांग्रेस में सक्रिय हुए, तो उन्होंने स्त्रियों को स्वाधीनता आंदोलन से जोड़ा। देश के विभिन्न शहरों में राष्ट्रीय और प्रांतीय स्तरों पर अनेक सम्मेलन आयोजित किए गए। इसका नतीजा यह हुआ कि महिलाओं ने शराबबंदी के साथ विदेशी कपड़ों की होली जलाने में बढ़–चढ़कर हिस्सा लिया। नमक आंदोलन के दौरान जब गांधी जी गिरफ्तार कर लिए गए तो उनके बाद सत्याग्रह की कमान सरोजिनी नायडू संभाली। गांधी जी के साथ अनेक महिलाएं थीं, जो उनके प्रयोग के साक्षी और सहभागी रहीं जिनमें एक रवींद्र नाथ ठाकुर की भांजी सरला देवी थीं, जिन्होंने खादी के प्रचार–प्रसार के साथ गांधी जी की देखभाल की। गांधी जी उन्हें अपनी आध्यात्मिक पत्नी कहते थे। इनके अलावा राजकुमारी अमृत कौर थी, जिनसे गांधी जी की खूब खतो–किताबत होती थी। पहली मुलाकात 1934 में हुई। नमक सत्याग्रह और भारत आंदोलन के दौरान जेल गई। आजाद भारत की पहली स्वास्थ्य मंत्री बनी। गांधी जी की निजी डाक्टर सुशीला नायर थी।

उनके भाई प्यारेलाल गांधी जी के निजी सचिव थे। भारत छोड़ों आंदोलन के दौरान कस्तूरबा के साथ जेल गईं। गांधी जी जिन दो महिलाओं के कंधे पर हाथ रखकर चलते थे, उनमें से एक आभा जन्म से बंगाली थी। उनकी शादी गांधी जी के परपोते कनु गांधी जी से हुई थी। आभा गांधी जी के साथ नोआखाली यात्रा में थी। आभा के साथ मनु भी थी। मनु महात्मा गांधी जी की दूर की रिश्तेदार थी। गांधी जी मनु को पोती कहते थे। ये आभा और मनु उस समय मौजूद थी, जब 30 जनवरी, 1948 को गांधी जी को नाथूराम ने गोली मारी थी।

पहला गिरमिटिया नाम से गांधी जी पर प्रमुख उपन्यास के लेकख गिरिराज किशोर कहते हैं कि महिलाओं को जिनती स्वतंत्रता गांधी जी ने दी उतनी आधुनिक देश और समाज नहीं देते। गांधी जी विचार की सर्वोचच संगठन सर्व सेवा संघ की अध्यक्ष रहीं राधा भट्ट कहती हैं कि गांधी जी महिलाओं में अहिंसा की विशेष शक्ति देखते थे। वे उसे जगाकर एक समतामूलक समाज बनाना चाहते थे। तभी वे कहते थे कि अहिंसा की नींव पर रचे गए जीवन की रचना में जितना और जैसा अधिकार पुरूष को अपने भविष्य की रचना का है, उतना और वैसा ही अधिकार स्त्री को भी अपने भविष्य तय करने का है। गांधी जी कहते थे कि मैं स्त्रियों को समुचित शिक्षा का हिमायती हूँ, लेकिन मैं यह भी मानता हूँ कि स्त्री दुनिया में अपना योग पुरूष की नकल करके या उसकी प्रतिस्पर्द्धा करके नहीं दे सकती। गांधी जी का ससाफ मत था कि स्त्री को पुरूष की पूरक बनना चाहिए।

निष्कर्ष :
भारत के स्वतंत्रता संग्राम में महात्मा गाँधी ने जो अपूर्व योगदान दिया, वह तो महत्वपूर्ण है ही, उसके साथ–साथ उन्होंने सामाजिक कुरीतियाँ दूर करने में जो अहम् भूमिका निभायी, वह भी विस्मरणीय है। स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए उन्होंने असहयोग और सविनय अवज्ञा आन्दोलन को अपना मुख्य साधन बनाया। भारतीय मानस में गहरे पैठी अहिंसा की मूल भावना ही उनके साधनों के इस चयन की मुख्य प्रेरणा रही। सही अर्थों में गाँधी जी स्त्रियों की राजनीतिक और सामाजिक मुक्ति के उद्घोषक थे। पर्दे की क्रूरता, बाल–विवाह के अन्याय, विधवा के पुनर्विवाह पर प्रतिबंध और वास्तव में उस बात के विरुद्ध उन्होंने आवाज उठाई जो भारतीय स्त्रियों को सीमित और संकुचित कर रही थी। बिहार की कुछ बुद्धिमान और उदार महिलाएँ उनकी सहयात्री रहीं और उनके आन्दोलनों में आगे की पंक्ति में रहकर लड़ीं। बिहारी स्त्रियों को उन्होंने उनकी अपनी प्रतिष्ठा और शक्ति के प्रति जागरूक बनाया। उनका विश्वास था कि ये कार्यक्रम भारत की स्वतंत्रता के बाद उसकी उन्नति और प्रगति के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण सिद्ध होंगे। भारत की स्वतंत्रता की लड़ाई में महिलाओं ने वीरता के साथ क्रांतिकारी और अहिंसक आंदोलनों में भाग लिया। भारत के इन महिलाओं का लक्ष्य एक ही था आजाद भारत, परंतु उसे पाने का रास्ता अलग। दोनों रास्ते पर चलने के लिए बेहदद दृढ मानसिकता और अदम्य साहस की आवश्यकता होती है। उस जमाने में बहुत सी बाधाओं के बावजूद स्वाधीनता संग्राम में भारतीय महिलाओं का योगदान पुरूषों से कम नहीं था।

lnHkZ lwph

I. Guha, Ramachandra (2014) Gandhi before India, Publisher Penguin UK, pp.112-114.

II. Jones, David E. (2000) Women Warriors: A History Potomac's the warriors series Warriors Potomac Books Incorporated, Washington, D.C., pp.65-68.

III. Jerosch, Rainer (2007) The Rani of Jhansi, Rebel Against Will: A

Biography of the Legendary Indian Freedom Fighter in the Mutiny of 1857-1858. Aakar Books, New Delhi, pp.38-42.

IV. Paranjape, Makarand R. (2010) Sarojini Naidu. Publisher Rupa & Company, Kolkata, pp.92-94.